Annexure XII CAT III (A) (Page-25) Cont.

आधुनिकता के सरमाये में मानव

- दीप्ति

जन्म - 11 नवंबर 1982।

जन्मस्थान - अमृतसर।

शिक्षा - एम.ए., बी.एड., पीएच.डी.।

रचनाएं - पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

आधुनिक भौतिकवादी व पदार्थवादी समय में मानव ने निश्चित रूप से वैज्ञानिक, व तकनीकी क्षेत्रों में अत्यंत प्रगति की है परंतु नैतिक मूल्यों व भावनात्मक दृष्टि से निरंतर पतन के गर्त में गिरता चला जा रहा है। आधुनिक मानव भावनाओं से धीरे-धीरे शून्य होता जा रहा है। उसका स्थान व्यक्तिगत हित, सुख एवं स्वार्थ लेता जा रहा है। आधुनिकता में मानव के विभिन्न रूपों में नवीकरण प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। आधुनिक मानव अपने आसपास के परिवेश में परिवर्तन व नवीकरण की प्रक्रिया से अनभिज्ञ नहीं है। इस बदलाव को वह तीव्रता से अनुभव भी कर रहा है और स्वीकृति भी दे रहा है। रवींद्र कालिया लिखते हैं, 'मानव की पीड़ा, संत्रास का कारण शोषणमूलक व्यवस्था है न कि उसकी नियति या भाग्य। इन ह्रासशील प्रवृत्तियों का विरोध ही आधुनिकता है।' (डॉ. सपना शाह, 'नई कहानी में आधुनिकता बोध' कानपुर : पुस्तक संस्थान, 1978, पृष्ठ 121)

हिंदी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर डॉ. मधु संधू की पुस्तक 'दीपावली@अस्पताल. कॉम' में संकलित कहानियों व लघु कथाओं में आदि से लेकर अंत तक लेखकीय चिंतन में समाहित आधुनिकता का स्वर प्रमुख है। 'दीपावली@अस्पताल. कॉम' पुस्तक में संकलित कथाओं एवं लघु कथाओं (रुआब, दीपावली@अस्पताल. कॉम, मैरिज ब्यूरो तथा नवीकरण) के माध्यम से आधुनिकता के सरमाये में मानव के विभिन्न रूपों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

21 वीं सदी के भौतिकतावादी परिदृश्य में मानव स्वार्थी बन गया है और केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति में हमेशा संलग्न रहता है। समाज व मानवता के कल्याण से उसे कोई लेना-देना नहीं है। 'रुआब' लघु कहानी का नायक फार्मेसी में डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात भी बेरोजगारी से पीड़ित रहता है। डेढ़-दो हजार में डॉक्टरों के पास बारह घंटे काम करता है, फिर पिता की असमय मृत्यु उसके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आती है। 'स्थानीय अस्पताल में अनुकम्पा नियुक्ति हो गई और वह सरकारी कर्मचारी बन गया। पिता के पी.एफ., ग्रेचुएटी से कार ले ली और लोग उसे कर्मचारी नहीं, अधिकारी, कम्पाउडर नहीं, डॉक्टर समझने लगे। छत पर एक पुराना जनरेटर और मशीन खरीदकर ऐनकों के शीशे बनाने का काम शुरूकर लिया। दो कारीगर आने लगे और वह सरमायादार बन गया।' (डॉ. मधु संधु, 'दीपावली@अस्पताल. कॉम', रुआब (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015, पृष्ठ 119)

पैसों के रुआब में वह आस-पड़ोस के लोगों के लिए परेशानी का कारण बनता है। प्रस्तुत

156

कहानी के पुरुष पात्र द्वारा धन-संपत्ति का रुआब दूसरे लोगों पर डालना अनुचित प्रतीत होता है। कहानी एक यथार्थ समस्या को चिन्हित करती है। आमतौर पर हम अपने समाज में ऐसे यथार्थ पात्रों को देखते हैं जो व्यक्तिगत हित व स्वार्थ पूर्ति के लिए आस-पड़ोस की सुख-सुविधा का ध्यान न रखते हुए उनके लिए नित नवीन समस्याओं का निर्माण करते रहते हैं। इस प्रकार 'रुआब' में आधुनिकता दो स्तरों पर मिलती है। नायक का आर्थिक संघर्ष और अस्तित्व चेतना तथा अर्थाधिक्य से उत्पन्न असंवेदनशीलता।

'दीपावली@अस्पताल.कॉम' कहानी समाज के सामान्य मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है जिसके पास अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सीमित धन ही होता है। कहानी का आरंभ घर की मरम्मत से आरंभ होता है। 'सब दीवारें, छतें, फर्श, अलमारियाँ रिपेयर माँग रही हैं। इस वर्ष हिम्मत करके पापा ने उसारी लगा ही ली। सिर्फ पंद्रह दिनों में सारा काम निपटाने का सोचा गया है।' (वही, पृष्ठ 55)

तभी पिताजी की तबीयत खराब हो जाती है। फैमिली डॉक्टर वहाँ आकर उन्हें दूसरे हार्टअटैक पड़ने की बात कंफर्म करता है। 'आनन-फानन में उन्हें शहर के सबसे अच्छे अस्पताल ले जाया गया। बीस हजार रुपये एडमीशन फीस देकर पापा एडमिट कर लिए गये। उन्होंने एक टीका लगाया और पापा की हालत सुधरनी शुरू हो गई। जल्दी ही उन्हें नॉर्मल लगने लगा। घर लौटने को मन होने लगा।' (वही, पृष्ठ 55)

परंतु अब वे अस्पताल के शिकंजे में फँस चुके थे। जहाँ मरीज केवल धन कमाने का साधन होता है। (वही, पृष्ठ 56)

दूसरी तरफ छोटे केबिन में अलग बैठे युवक-युवतियाँ अटेंडेंट को खर्च, पैकेज समझा रहे थे। तीन दिन के पैकेज का मिनिमम रेट दो-ढाई लाख बता रहे थे जो कि अंत में किसी न किसी तरह चार लाख के आसपास पहुँच ही जाता। पिता के इलाज के लिए 'घर के कायाकल्प के लिए रखे सारे पैसे लगाने पड़े और सौ-सौ, हजार-हजार रुपये करके जोड़े, एफ.डी. वगैरह में सहेजे अपने सारे पैसे बैंक से तुरंत निकलवाने पड़े।' (वही, पृष्ठ 56)

यह शहर का पाँच सितारा होटल से भी खूबसूरत नामी अस्पताल था जिसने दूसरे अस्पतालों के डॉक्टरों को दुगने वेतन+कमीशन देकर अपने अस्पताल में रहने को विवश कर दिया है। पिता जी को ऑपरेशन के बाद इमरजेंसी में रख तीन दिन का पैकेज दो दिन में ही खत्म कर दिया गया। 'पापा लगातार सोच रहे थे कि अगर एंजिओग्राफी ही करवाई जाती, तो भी यही परहेज और यही दवाइयाँ थीं और अब जब कि लाखों का खर्च हो चुका है, तो भी वही परहेज और दवाइयाँ हैं। अंतर क्या है?' (वही, पृष्ठ 58)

पिता जी के ऑपरेशन के समय दीवाली के आसपास के दिन थे जब सब ओर हर्षोल्लास का संचार होता है। बाजार भीड़ से भरे रहते हैं। दुकानदार जरा से डिजाइनदार डिब्बे में डेढ़-दो सौ का ड्राईफ्रूट डाल साढ़े चार सौ में बेच रहे थे और अस्पताल में डॉक्टर मरीजों के गैर जरूरी ऑपरेशन कर, स्टेंट डाल, मरे हुओं को वेंटीलेटर में रख दीपावली मना रहे थे। घर आने के पश्चात् कंस्ट्रक्शन का सामान पिछली डक्ट में रखवा दिया जाता है और घर में संवादहीनता की स्थिति बन जाती है। प्रस्तुत कहानी ईश्वर का रूप समझे जाने वाले डॉक्टरों की संवेदनहीनता को दर्शाती है। तथा कहानी अमीर-गरीब के भेद को न पहचान कर डॉक्टरों के द्वारा किसी तरह केवल धन को ऐंठने की कुप्रवृत्ति पर प्रकाश डालती है। कहानी में समाया भ्रष्ट तंत्र के प्रति रोष मुखर रूप से अभिव्यक्त हुआ है।

Annexure VII (A T III (A) (Page-27) Cont.

21वीं सदी में प्यार, विश्वास, त्याग इत्यादि इन ऊँचे आदर्शों के लिए जगह ही नहीं बची है। आजकल के अवसरवादी लोगों के पास इन ऊँचे आदर्शों को सहेज कर रखने का समय नहीं है। भौतिकवादी व पदार्थवादी युग में मानव अवसर पाते ही अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति तथा सुखमय भविष्य के स्वप्न पूर्ति हेतु दूसरों को धोखा देने व विश्वास तोड़ने से कदापि नहीं चूकता। 'मैरिज ब्यूरो' कहानी विश्वविद्यालय में पढ़ते युवक और युवती के प्रेम से आरंभ होती है। मंशा और सन्मार्ग एक दूसरे को बेहद प्रेम करते हैं। सन्मार्ग उसे पुअर स्टूडेंट्स फंड और लाइब्रेरी में काम करके पैसे बचाकर एक मोबाइल उपहार स्वरूप देता है जिससे कि उन्हें बात करने में किसी तरह की कोई परेशानी न हो। उन दोनों के बीच प्रेम का यह सिलसिला महीनों तक चलता है। पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद सन्मार्ग नौकरी की तलाश में भटकता है तो मंशा के घरवाले उसके लिए अच्छे से वर की तलाश में जुट जाते हैं। उन्हीं दिनों मंशा का स्कूल का सहपाठी स्वरजीत अपनी छोटी बहन की शादी के लिए बॉस्टन से एक महीने के लिए सपरिवार भारत आता है।

तेईस वर्षीय स्वरजीत मनीषा से शादी की इच्छा व्यक्त करता है और उसकी जिद के आगे उसके परिवार को झुकना ही पड़ता है। 'इधर तीसरी दुनिया के ऊर्ध्वमुखी सन्मार्ग के जीवन का संविधान नौकरी की तलाश में कछुआ गति से रेंग रहा था, उधर स्वरजीत मंशा को दुल्हन बना विदेश ले गया।' (वही, पृष्ठ 92)

प्रस्तुत कहानी की नायिका का अवसरवादी और भविष्यचेता होना उसकी आधुनिकता को ही चिन्हित करता है।

आधुनिकता के युग में समाज के अन्य वर्गों की तरह भिखारी भी आधुनिक बनने की दौड़ में सम्मिलित हो गए हैं। लघु कहानी 'नवीकरण' में रेल्वे स्टेशन में नीले राजस्थानी सूट और वैसा ही दुपट्टा ओढ़े आकर्षक युवती का जिक्र है। 'उसकी पार्लर सँवरी भवें, ताजे धुले तरतीब में समेटे बाल, हेयर क्लिप, प्लेटफॉर्म हील के सैंडिल-सब उसे स्तरीय आइडेंटिटी दे रहे थे। जैसे ही वह पास आई और 'मैडम, दस-बीस रुपया दान करो' की गुहार लगाई तो उसका विनीत विश्वस्त स्वर मैडम को ही अचंभित कर गया।' (वही, पृष्ठ 113)

इसी तरह कहानी में प्रदेश की बाढ़ की दुहाई देती दान लेने आई तेरह वर्षीय किशोरी का भी जिक्र है जिसके सुंदर कपड़े, स्पोर्ट्स शूज व मोबाइल किसी भी तरह से उसके भीख लेने की गवाही नहीं दे रहे थे। हम अपने आसपास यथार्थ में इन जीवंत पात्रों को देखते व उनसे मिलते हैं। कहानी की युवती तथा किशोरी द्वारा पारम्परित रूप को चुनौती देते नया स्वरूप अपनाना उनकी आधुनिक सोच की पहचान है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पुस्तक 'दीपावली @अस्पताल.कॉम' में चित्रित कहानियाँ और लघु कथाएँ आधुनिकता के संदर्भ में मानव के विभिन्न रूपों में परिवर्तन एवं नवीकरण की प्रक्रिया को चिन्हित कर रही हैं। धन-संपत्ति की लालसा के पीछे आज अँधाधुंध दौड़ लगा रहा मानव अपनी भावनाओं एवं परोपकार जैसे उच्च आदर्शों को कुचलता हुआ व्यक्तिगत सुख हेतु भौतिक पदार्थों के संचय में जुटा हुआ है। यह परिवर्तन क्षणिक रूप से सुखद तो लगता है लेकिन दीर्घकालिक रूप से दुख एवं चिंता का ही कारण बनता है। चूँकि आधुनिकता मूल्य नहीं दृष्टि है, अत: आधुनिक मानव को त्याग, प्रेम, सेवा, परोपकार, समाज के कल्याण इत्यादि उच्च आदर्शों के महत्व को समझने एवं अपनाने की अत्यंत आवश्यकता है जिससे वह सुखद भविष्य की नींव रखने में समर्थ हो सके।

19-ई, डब्ल्यू/ओ.डॉ. साहिल साहनी,
कॉलेज, गली-रानी का बाग,
अमृतसर-143001 (पंजाब)
मो. - 9501077702

158

आत्मनिर्भर भारत में स्वदेशी एवं ग्राम स्वराज

प्रधान सम्पादक
अमित कुमार दूबे

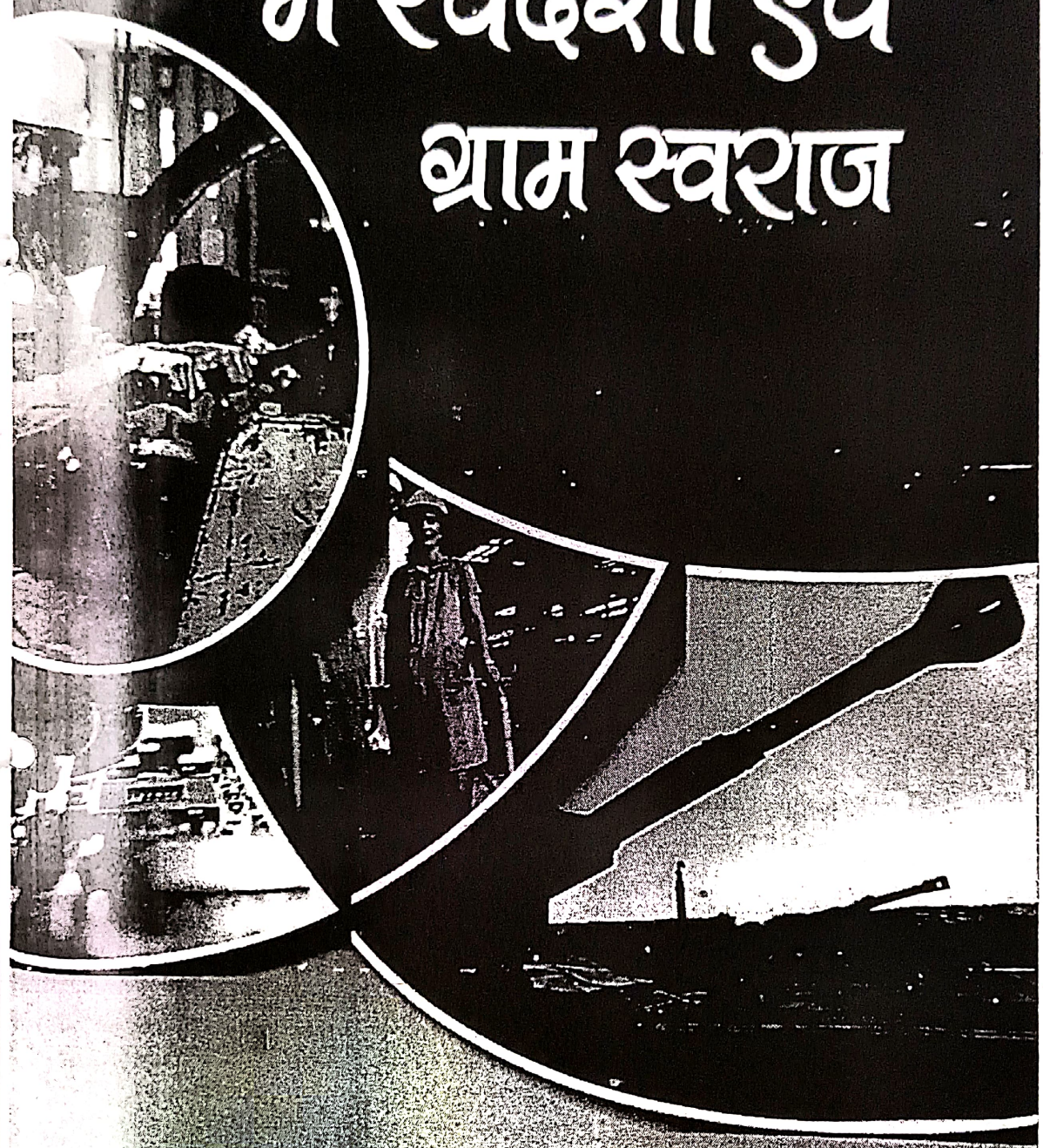

सम्पादक
रागिनी मिश्रा